International Journal of Arts, Humanities and Social Studies
www.socialstudiesjournal.com
Online ISSN: 2664-8660, Print ISSN: 2664-8652
Received: 04-01-2021, Accepted: 08-02-2021, Published: 12-02-2021
Volume 3, Issue 1, 2021, Page No. 31-33

भारत की पाकिस्तान नीतिः निरंतरता और बदलाव की आवश्यकता

दिनेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, तरावड़ी, करनाल, हरियाणा, भारत

DOI: https://doi.org/10.33545/26648652.2021.v3.i1a.56

सारांश
भारत के प्रति पाकिस्तान का दृष्टिकोण हमेशा सन्देहात्मक ही रहा है, भारत–पाक सम्बन्धों की कहानी भारतीय उपमहाद्वीप के दो बड़े देशों की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवम सांस्कृतिक विचारधाराओं, समानताओं, विषमताओं, अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण एवम् राष्ट्रीय हितों के साथ जुड़ी है. इसका फायदा बड़ी महाशक्तियों ने सैनिक अड्डे, द्वीपों तथा बन्दरगाहों के रूप में इस्तेमाल कर उठाया है क्योंकि पाकिस्तान जैसे देश भारत के खतरे का हौवा खड़ा करके अमेरिका से आर्थिक सहायता प्राप्त करता रहा है. पाकिस्तान की विडम्बना सबसे बड़ी यही रही है कि वहां की फौज ने हमेशा ही वहां की सरकारों में अप्रत्यक्ष रीति–2 व प्रत्यक्ष हस्तक्षेप किया है, यही पाकिस्तान की बर्बादी का सबसे बड़ा कारण रहा है।

कूटशब्द: भारत की पाकिस्तान नीति निरंतरता, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक

प्रस्तावना

भारत और पाकिस्तान के सबंध स्वभाव से ही प्रतिद्वंद्विता के रहे हैं। इसकी जड़ों में कट्टर भावना और मतभेद का इतिहास है। भारत का विभाजन हो या कश्मीर की समस्या, यहां तक कि 1965 और 1971 के युद्धों के कारणों पर भी, दोनों देशों का नजरिया भिन्न रहा है। आम पाकिस्तानी भी यह मान बैठा है कि सीमा पार से आतंक की समस्या इसलिए है कि भारत से पाकिस्तान को खतरा है। दोनों देशों के बीच गहरे मतभेदों को दूर करने के लिए जरूरी है कि ऐतिहासिक तथ्यों पर बातचीत हो और राजनैतिक कारणों से पैदा हुए विकृतियों को दूर रखा जाए।

पदभार संभालने के साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पड़ोसी देशों के प्रति नीति पर खास जोर दिया। पर क्या मोदी बातचीत की प्रक्रिया में बदलाव लाकर, भारत–पाकिस्तान संबंधों में मौजूद दुष्चक्र को तोड़ने में सफल रहे? भारत ने 2015 में पाकिस्तान के साथ संरचनात्मक वार्ताओं के लिए फिर पहल की। लेकिन, जनवरी 2016 में भारतीय वायुसेना के पठानकोट हवाई अड्डे पर आतंकी हमले ने फिर साबित कर दिया कि पाकिस्तान के साथ संबंध सुधारने की प्रक्रिया का स्वरूप कितना नाजुक है। संशयवादियों का मानना है कि भारत और पाकिस्तान के बीच कभी वार्ता–कभी बाधा–कभी वार्ता का यह सिलसिला यूं ही चलता रहेगा।

पठानकोट हमले के बाद इस बात पर बहस चल रही है कि भारत को क्या पाकिस्तान को काबू में रखने की नीति पर चलना चाहिए या उसके साथ शांति के लिए कोई व्यापक कार्ययोजना अपनानी चाहिए। अभी इस बहस का कोई खास असर नजर नहीं आ रहा है। लेकिन, इस बात पर जोर देना जरूरी है कि सकारात्मक नतीजों के लिए यदि पाकिस्तान के साथ वार्ता को स्थिरता प्रदान करनी है तो पाकिस्तान से नई नीतियों के साथ व्यवहार करना होगा।

गत 2 जनवरी को सीमा पार से आए आत्मघाती आतंकियों के पठानकोट एयरबेस पर हमले से, यही दिखता है कि पाकिस्तान के रवैये में कोई बदलाव नहीं आया। कई लोगों का मानना था कि परिस्थितियों को देखते हुए ऐसा कोई हमला अपेक्षित था। पाकिस्तान ने राजनीतिक नेतृत्व के शांति प्रयासों को कई बार ध्वस्त किया है। लेकिन, जो अपेक्षित नहीं था, वह था इस हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के राजनीतिक नेतृत्व की प्रतिक्रिया। क्रिसमस के मौके पर, मोदी की पाकिस्तान की अनपेक्षित यात्रा के एक सप्ताह बाद हुए इस हमले के बावजूद, सरकार ने जज्बाती होकर प्रतिक्रिया नहीं दी। भारत ने वार्ता का सिलसिला रोकने का फैसला नहीं किया बल्कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने साथियों और अधिकारियों से संयम बरतने को कहा। भारत इस हमले के बाद पाकिस्तान की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करना चाहता था। पाकिस्तान ने भी इस हमले की कड़ी निंदा की और भारत को आश्वासन दिया कि जो सबूत भारत पाकिस्तान को सौंपेगा, उन पर गंभीरता के साथ कार्रवाई की जाएगी। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ बात की। पाकिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार रि. जनरल नसीर खान जंजुआ ने अपने समकक्ष अजीत डोभाल से बातचीत की। भले ही अतीत में पाकिस्तान के साथ बातचीत और व्यवहार के कोई खास नतीजे नहीं निकले हों, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने 2016 में पाकिस्तान के साथ बातचीत के तौर–तरीकों में खास बदलाव लाने का अवसर खोजने की चेष्टा जरूर की। अपनी पार्टी के प्रभावी नेता होने, लोकसभा में भारी बहुमत और विश्व की बड़ी ताकतों के साथ मजबूत रिश्ता के कारण, मोदी को कामयाबी की गारंटी न होने के बावजूद, पाकिस्तान के साथ नए सिरे से बातचीत करने का जोखिम उठाने की ताकत हासिल थी।

मीडिया की भूमिका

कठोर अंगभंगिमाओं का प्रदर्शन करके जहां दोनों देशों की नौकरशाही ने शांति वार्ता को आघात पहुंचाया, वहीं भारतीय मीडिया ने दोनों देशों के बीच होने वाली वार्ता की किसी भी कोशिश को, इस तरह पेश किया मानो दो तलवारबाजों के बीच जंग छिड़ने वाली हो। मीडिया के इस आक्रामक तेवर के जवाब में मोदी को चाहिए कि वे इसकी अनदेखी करें और पाकिस्तान के साथ सामान्य रूप से बातचीत जारी रखें। साथ ही सकारात्मक तत्वों के साथ समानांतर, निरंतर और संयम

2020-21

Article

IndianJournals.com
A product of Diva Enterprises Pvt. Ltd.

DOI:

Domestic Constraints in the Genesis of Western Style of Democracy in China

Political Discourse
7(2), December 2021
pp. 238-246

Sumit

Abstract

The last decade of the twentieth century is full of some form of democratic transition all around the world. Samuel P. Huntington described this phenomenon as the "Third Wave of Democratization" in his book The Third Wave: Democratization in the Late Twentieth Century. There is this Modernisation Theory which explains the phenomenon of transition of the state into a democratic form of government by analyzing the economic and social progress of the states. China undoubtedly has progressed a lot economically in the last three decades and with the increasing affluence, society is also changing simultaneously. As modernization theory explains that economic progress is followed by political reforms. But still, China has managed to carry its economic growth trajectory up and improved the lives of hundreds of millions of people without making many concessions in the political field. It is still governed by the Chinese Communist Party (CCP) which is more or less authoritarian. China is among one of the few states which are still undemocratic in nature in western scholar perspectives. There is a lot of speculation about China's future and its political system. But democracy does not have just one form in which every political system has to be fit. Chinese government and Academicians claim that China has its form of democracy. The Chinese government claims that they are regularly carrying political reform but these political reforms are far away from the western style of democracy. Some domestic constraints constrained the growth of the western style of democracy in China.

Keywords: Democracy, Government, Economic, Modernisation Theory, Authoritarian, Reform

Sumit, Assistant Professor, Department of Political science, Government College for Girls, Taraori, Karnal, Haryana, India
Email id: sumitlathwal7@gmail.com

Total=03 Annexure 2 2021-22

Session = 2021-22

SHODHSAMHITA
शोधसंहिता

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group I

भारतीय विदेश नीति का सारगर्भित मूल्यांकन

दिनेश कुमार
एसिस्टेंट प्रोफेसर, राजा अध्ययन विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय तरावड़ी, करनाल, (हरियाणा)

भारत की विदेश नीति प्रारम्भ से ही अग्नि परीक्षा से गुजरती रही है। किसी भी देश की विदेश नीति का सही मूल्यांकन उस समय होता है जब वह राष्ट्र स्वयं दूसरों के साथ युद्ध में फंसा हो या मित्र देशों के मध्य अस्तित्व की लड़ाई प्रारम्भ हो गई हो।

सर्वप्रथम गुटनिरपेक्षता की बात जब विश्व रंगमंच पर उठाई गई तो इस पर तरह-तरह के संदेह व्यक्त किए गए। अमेरिका की नीति का प्रारम्भ से ही यह उद्देश्य रहा है कि साम्यवाद के बढ़ते प्रभाव व प्रसार को रोका जाए, भले ही इसके लिए सैन्य दल ही क्यों न प्रयोग करना पड़े। जब तक इन गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु यूरोप था तब तक भारत ने इसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली किन्तु कोरिया युद्ध के दौरान जब यही प्रक्रिया चीन के साथ भी हुई तब भारत सरकार ने खुलकर इसका विरोध किया। साथ ही उत्तरी कोरिया द्वारा दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण किये जाने के समय भारत ने दक्षिण कोरिया का जमकर खुला समर्थन किया। इस समर्थन से अनेक राष्ट्रों में भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति के विरुद्ध बड़ी तीव्र हलचल एवं प्रतिक्रिया हुई। किन्तु भारत इससे तनिक भी विचलित नहीं हुआ। कोरिया युद्ध के समय गुटनिरपेक्षता की नीति की जितनी तीव्र आलोचना अमरीकी कांग्रेस में हुई उससे भी तेज आलोचना रूस द्वारा की गई। भारत ने इन प्रतिक्रियावादी राष्ट्रों को यह दर्शा दिया कि गुटनिरपेक्षता का अर्थ विश्व में घटित हो रही घटनाओं के प्रति निष्क्रिय होना नहीं बल्कि इसका तात्पर्य तो न्याय को समर्थन देते हुए उचित सिद्धान्त का प्रतिपादन है। यह संतोष की बात रही है कि यहीं से भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति को रूसी तथा अमरीकी दोनों गुटों ने सम्मान देना प्रारम्भ कर दिया। जैसा कि हमें ज्ञात है कि भारत की विदेश नीति साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद की विरोधी रही है। इसी उद्देश्य के परिप्रेक्ष्य में भारत ने १९५६ में ब्रिटेन तथा इसाइल की सेनाओं द्वारा मिस्र पर किए गए आक्रमण का खुला विरोध करते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी।

भारत के चारों ओर भू-सांस्कृतिक परिवेश तथा इसके परिणामस्वरूप उभरनेवाली प्रवृत्तियों ने भारत के बाह्य दृष्टिकोणों पर प्रभाव डाला है। सर्वाधिक प्रभावशाली -भारत का विभाजन, दो राष्ट्रों के सिद्धान्त पर आधारित था। जिसके पीछे कोई वास्तविक आधार नहीं था। यद्यपि पाकिस्तान इस आधार पर बनाया गया था कि इस उपमहाद्वीप में मुसलिम वर्ग का अलग राष्ट्र हो तथा पाकिस्तान इस वर्ग का अपना देश होगा, तथापि इस उपमहाद्वीप की मुसलिम आबादी का एक तिहाई से ज्यादा भाग भारत में ही रह गया था। पाकिस्तान के निर्माता अभी भी असंतुष्ट थे, क्योंकि जो भाग वे चाहते थे, वे पाकिस्तान को नहीं मिल पाए। विभाजन के बाद भारत और नवनिर्मित देश पाकिस्तान में बड़ी संख्या में शरणार्थियों की समस्या ने भारत और पाकिस्तान, दोनों देशों की मनोवृत्ति को विकृत किया। हिंदू-मुसलिमों के व्यापक स्तर पर नृशंस जनसंहार का मन की अंतरतम गहराइयों पर प्रभाव पड़ा। कश्मीर प्राप्त करने में असफलता तथा हैदराबाद के निजाम अली के साथ संपर्क बनाने के निष्फल प्रयासों से पाकिस्तान में भी कड़वाहट फैली तथा भारत के मन में भी यह संदेह तथा

Total 204

IJRPR2791 (1).pdf

2021-22

International Journal of Research Publication and Reviews, Vol 3, no 2, pp 1286-1289, February 2022

International Journal of Research Publication and Reviews

Journal homepage: www.ijrpr.com ISSN 2582-7421

Women of Haryana : The Most Efficient Career of Culture and Tradition

Sarita Yadav

Assistant Professor, Department of History, GCG Taraori

ABSTRACT

It does not require any evidence to establish that customs and ritual collectively followed by the past generations have been passing through a critical phase of their evolution in the modern era. People are moving to urban area and slowly they [illegible] following new trends and stop to draw festival paintings on their house wall. [illegible] India has own [illegible] and pattern of art

which [illegible] folk art. Most of the [illegible] traditions are followed by women. These art works displayed with various form of art. Women have belief system and faith on their self created drawings in the rural area. Art works are not just pure piece of unique art but an excellent medium to express one's faith on god and their [illegible] belief system. These forms are very simple, single, [illegible], thoughtful and rich heritage. The rural folk art in India specially in Haryana bear distinctive pattern design which are relate with ritual and religious as well as mystical motifs. Therefore, the present study is an endeavor to highlight not only the significance of customs and traditions but also to underscore the role taken by women of Haryana as career to these rituals. Some of the festivals celebrated in Haryana have been discussed in this paper putting women of Haryana on the map, primarily who belong to rural areas.

Keywords: Traditional, Rural, Festival Painting, Women

1. Art of Goga Navami:

Goga Navami also known as Goga Navami. Goga Navami is Indian annual festival dedicated to lord Goga "the god of snake". This festival celebrated on the Navami tithi of krishana paksha in the month of august / September and the Hindu calendar month of Bhadrpad. This day is worshiped by every family and this is a very famous folk deity which worshiped with full of devotion. In Hindu tradition, Jahar Veer Gogga also called Gogaji. This festival popular in northern India - Uttar Pradesh, Rajasthan, Punjab, Haryana and Himachal Pradesh. At this day women makes a traditional drawings on their kitchen area. They make drawing of Goga Navami. Ritually drawing of Goga Navami made on the stove and they draw snakes, horse and the image of Goga Ji. Mostly places women use charcoal sticks and some of [illegible]. These drawings carry very creative forms of art which are similar to the Indian folk art like Warli paintings of Maharashtra, Pithora paintings of Gujarat. Basic rectangular structure is similar to the Sanjhi paintings. These traditional art forms are very unique and pure art form as well as excellent medium to assert one's love for God faith. This shows the value of tribal and rural art by using their motifs. Draw of these drawings is the ritual festival carried by women through generation to generation.

These artifacts are very natural and very pure. Women have faith in their self made drawings and they worshiped those. They love to narrate the story of Goga Navami on the festival of Goga. Now a day's most of the families started to move in urban areas and

they started to draw on paper. This shows how the tradition slowly going to vanish. And people are coming in to the trends, but no rural women's are playing very important role to carry tradition with festival painting. In the modern era these form of art can be seen on cloth designing, bag designing, [illegible] and [illegible] designing etc. It shows how the traditional art is coming in to the fashion.

Basic rural art form and popular folk art form are very similar but it differs from region to region. This art has specific ritual and social connotation.

2. Art of Karva Chauth

Perhaps one of the best known Indian festivals of Indian women is the fast (upvas) of Karva Chauth. This is a Hindu festival. On this day women draw a image of Chauth Mata on the their house wall. On this festival women's drawing includes various art figures like - stairs, moon, women, child, decorative boundary and the image of Karva Chauth Devi/Mata. Using these element women makes the rich and elegant wall art with the nearest availability from the primary source. Pattern of art form is differ region wise. This is a folk tradition which is practiced by women as like as Mithila paintings, as tribal art is also practiced by women. How south Indian people makes Rangoli on the special day, similarly northern rural houses

decoration are enhanced by with their traditional drawing and painting. In the same way rural art have existence of different kind of shapes and folk tradition. But the form of art [illegible] similar in all over India like every folk and tribal art contain the form of geometrical pattern, vertical horizontal and oblique lines. Women [illegible] designs on the wall and Festival [illegible] with long tradition by women.

3. Karva Chauth

09:32

IJRPR2791 (1).pdf

International Journal of Research Publication and Reviews, Vol 3, no 2, pp 1286-1289, February 2022

International Journal of Research Publication and Reviews

Journal homepage: www.ijrpr.com ISSN 2582-7421

Women of Haryana : The Most Efficient Career of Culture and Tradition

Sarita Yadav

Assistant Professor, Department of History, GCG Taraori

ABSTRACT

It does not require any evidence to establish that custom and ritual collectively followed by the past generations have been passing through a critical phase of their evolution in the modern era. People are moving to urban area and slowly they started following new trends and stop to draw festival paintings on their house wall. Region wise India has own style and pattern of art

which known as folk art. Most of the folk traditions are followed by women. These art works displayed with various form of art. Women have belief system and faiths on their self created drawings in the rural area. Art works are not just pure piece of unique art but an excellent medium to express one's faith on god and their natural belief system. These forms are very simple, single, unique, thoughtful and rich heritage. The rural folk art in India specially in Haryana bear distinctive pattern design which are relate with ritual and religious as well as mystical motifs. Therefore, the present study is an endeavor to highlight not only the significance of customs and tradition but also to underscore the role taken by women of Haryana as career to these rituals. Some of the festivals celebrated in Haryana have been discussed in this paper putting women of Haryana on the map, primarily who belong to rural areas.

Keywords: Traditional, Rural, Festival Painting, Women

1. Art of Guga Novami:

Guga Novami also known as Goga Novami. Guga Novami is Indian annual festival, dedicated to lord Goga "the god of snake". This festival celebrated on the Novami tithi of krishana paksha in the month of august – September and the Hindu calendar month of Bhadrpad. This day is worshiped by every family and this is a very famous folk deity which worshiped with full of devotion. In Hindu tradition, Jahar Veer Gogga also called Gogaji. This festival popular in northern India – Uttar Pradesh, Rajasthan, Punjab, Haryana and Himachal Pradesh. At this day women makes a traditional drawings on their kitchen area. They make drawing of Goga Novami. Ritually drawing of Goga Novami made on the stove and they draw snakes, horse and the image of Goga Ji. Mostly places women use charcoal sticks and some of geru. These drawings carry very creative forms of art which are similar to the Indian folk art like Warli paintings of Maharastra, Pithora paintings of Gujarat, basic rectangular structure is similar to the Saora paintings. These traditional art forms are very unique and pure art form as well as excellent medium to assert one's love for God faith. This shows the value of tribal and rural art by using their motifs. Draw of these drawings is the ritual festival carried by women through generation to generation.

These artifacts are very natural and very pure. Women have faith on their self made drawings and they worshiped those. They love to narrate the story of Goga Novami on the festival of Goga. Now a day's most of the families started to move in urban areas and

they started to draw on paper. This shows how the tradition slowly going to vanish. And people are coming in to the trends, but no rural women's are playing very important role to carry tradition with festival painting. In the modern era these form of art can be seen on cloth designing, bag designing, cup and mug designing etc. It shows how the traditional art is coming in to the fashion.

Basic rural art form and popular folk art form are very similar but it differs from region to region. This art has specific ritual and social connotation.

2. Art of Karva Chauth

Perhaps one of the best known Indian festivals of Indian women is the fast (upvas) of Karva Chauth. This is a Hindu festival. On this day women draw a image of Chauth Mata on the their house wall. On this festival women's drawing includes various art figures like: - stars, moon, women, child, decorative boundary and the image of Karva Chauth Devi Mata. Using these element women makes the rich and elegant wall art with the nearest availability from the primary source. Pattern of art form is differ region wise. This is a folk tradition which is practiced by women as like as Mithila paintings, as tribal art is also practiced by women. How south Indian people makes Rangoli on the special day, similarly northern rural houses

[illegible] by with their traditional drawing and painting. In the same way rural art have existence of different kind of shapes and folk [illegible] all over India like every folk and tribal art contain the form of geometric pattern, vertical horizontal [illegible] designs on the wall and Festival [illegible] and with long tradition by women

Mod. Phys. Lett. A 2021.36. Downloaded from www.worldscientific.com by UNIVERSITY OF GENEVA on 04/08/22. Re-use and distribution is strictly not permitted, except for Open Access articles.

Modern Physics Letters A
Vol. 36, No. 25 (2021) 2150170 (8 pages)
© World Scientific Publishing Company
DOI: 10.1142/S0217732321501704

World Scientific
www.worldscientific.com

Role of central depression in the estimation of Coulomb excitation cross-section and absorption effects

2021-22

Monika Goyal
Department of Physics, DAV University, Jalandhar-144012, India

Rajiv Kumar*
Department of Physics, Government PG College for Women, Karnal-132001, India
kumarrajivsharma@gmail.com

Pardeep Singh
Department of Physics, Deenbandhu Chhotu Ram University of Science and Technology, Murthal-131039, India

Raj Kumar Seth
Department of Physics, DAV University, Jalandhar-144012, India

Rajesh Kharab
Department of Physics, Kurukshetra University, Kurukshetra-136119, India

Received 16 December 2020
Revised 4 July 2021
Accepted 14 July 2021
Published 20 August 2021

We have investigated the role of central depression parameter on the estimation of survival probability, the Coulomb excitation cross-sections and absorption effects of $^{80}Kr + {}^{197}Au$ system. The variation in central depression is found to be affecting all the above-mentioned quantities significantly. The survival probability and the Coulomb excitation cross-section are found to be decreasing with increase in w while the absorption effects are found to be increasing.

Keywords: Coulomb excitation; survival probability.

PACS Nos.: 25.70.De, 25.60.-t

*Corresponding author.

Rajiv